शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ग्रामीण सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन और मीडिया

अभिषेक प्रताप सिंह (शोधार्थी)
डॉ. श्रीमती विमलेश अग्रवाल
प्राध्यापक समाज शास्त्र
शासकीय महाविद्यालय, भितरवार
जीवाजी विश्वविद्यालय
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारतीय ग्रामीण समाज की संरचना विविधताओं से परिपूरित है। एक ओर यहाँ परम्परागत भारतीय सभ्यता के दर्शन होते हैं, तो वहीं दूसरी ओर यह समाज आधुनिकता की पृष्ठभूमि पर अपने पद्चिह्न स्थापित कर रहा है। आज भारतीय ग्रामीण समाज रूढ़ीवादी जंजीरों को तोड़कर आधुनिकता के आकाश में उड़ने के लिए प्रयासरत है। जिसका श्रेय मीडिया को देना अतिश्योक्ति नही होगा। अपने साथ सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पक्षों को लिए यह मीडिया वर्तमान समय में एक सशक्त माध्यम के रूप में ग्रामीण समाज के विकास एवं प्रगति में अपना योगदान देने का प्रयास कर रहा है। अपनी त्वरित एवं खोज परक प्रतिक्रियाओं के चलते आज मीडिया समाज का दर्पण बन चुका है। व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण में मीडिया की अहम भूमिका होती है। मीडिया उसे रात-दिन प्रभावित करता है। उसकी परम्पराओं, मान्यताओं, रीति-रिवाजों, भावनाओं, धार्मिक-सामाजिक आधारों के साथ-साथ मीडिया उसके सांस्कृतिक मूल्यों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों ही रूपों में प्रभावित कर रहा है। इस प्रभाव का असर उस व्यक्ति की बुद्धिमत्ता और उसकी परिस्थितियों पर निर्भर करता है, परन्तु यह स्पष्ट है कि मीडिया उसे किसी न किसी रूप में प्रभावित अवश्य कर रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में ग्रामीण संस्कृतिक मूल्यों के परिवर्तन में मीडिया की भूमिका पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

भारत एक कृषि प्रधान देश है कृषि देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है। भारत का नागरिक किसी न किसी तरह इन ग्रामीण क्षेत्रों से जुड़ा हुआ है फिर चाहे यह जुड़ाव प्रत्यक्ष हो या अप्रत्यक्ष। देश की आबादी का लगभग 70 प्रतिशत भाग ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है, जो भारत के सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश का एक बहुत बड़ा हिस्सा है।

इन ग्रामीण क्षेत्रों की अपनी संस्कृति होती है। संस्कृति मनुष्य और अन्य जीवधारियों में भिन्नता का मूल आधार कही जा सकती है। मनुष्य का जिस संस्कृति में लालन-पालन होता है, उसी संस्कृति के अनुसार उसका विकास होता है। संस्कृति का निर्माण परम्पराओं के समुच्चय स्वरूप माना जा सकता है। ये परम्पराएं समाज में व्यावहारिक प्रतिमान स्थापित करती है। इस संस्कृति के अपने कुछ मूल्य होते हैं, जिन्हें सांस्कृतिक मूल्य के नाम से जाना जाता है। सांस्कृतिक मूल्य दो शब्दों का मेल है। पहला शब्द है- संस्कृति। संस्कृति से तात्पर्य एक ऐसी व्यवस्था से है, जो मनुष्य के किसी स्थान विशेष

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पर रहन-सहन, लिखना-पढ़ना, बोल-चाल, आचार-व्यवहार आदि गतिविधियों का प्रतीक है। इसमें धर्म, कला, ज्ञान, विज्ञान, दर्शन, साहित्य, प्रथा, परम्परा, आचार आदि का समावेश है। जिसे मनुष्य एक लम्बे समय से व्यवहार में ला रहा है। जो मनुष्य के जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुकी है। दूसरा शब्द है-मूल्य। मूल्य वे कसौटियाँ या व्यवहार के मानदण्ड होते हैं, जिसके आधार पर कार्य को उचित या अनुचित के रूप में निर्धारित किया जा सकता है जो सही और गलत का फर्क स्पष्ट करते है इसके द्वारा किसी कार्य का मूल्यांकन किया जाता है और ऐसे कृत्यों का विरोध किया जाता है, जो इन मूल्यों के विरूद्ध हो। स्पष्ट है कि सांस्कृतिक मूल्य से तात्पर्य ऐसी सांस्कृतिक मान्यताओं से है, जो व्यक्ति को एक विशिष्ट पहचान प्रदान करती है तथा जिनका अनुसरण वह एक लम्बे समय से करता चला आ रहा है। ये सामान्य जीवन का एक अटूट हिस्सा बने हुए हैं, जिन्हें आसानी से बदला या समाप्त नहीं किया जा सकता और यदि परिवर्तन या बदलाव होता भी है, तो उसकी गति बहुत धीमी होती है। यदि सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन की बात की जाए, तो यह परिवर्तन, अन्य परिवर्तनों जैसे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि से ज्यादा व्यापक जान पड़ता है। इन सभी परिवर्तनों में कोई न कोई सम्बन्ध अवश्य पाया जाता है, परन्तु अन्तर भी स्पष्ट देखा जा सकता है, सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन, सामाजिक परिवर्तन के अधिक निकट कहे जा सकते हैं। परन्तु संस्कृति, समाज से व्यापक एवं जटिल व्यवस्था है। सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन से तात्पर्य ऐसे परिवर्तनों से है, जिनके द्वारा व्यक्ति विशेष के जीवन के वे सभी तरीके तथा ढंग परिवर्तित हो जाए, जो उसके शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति करते हो अर्थात् सांस्कृतिक मूल्य परिवर्तन में केवल सामाजिक संगठन या ढाॅचे वाले परिवर्तन ही नहीं आते अपितु वे सभी परिवर्तन आते हैं, जो कला, विश्वास, परम्परा, प्रथा, धर्म, आदत, ज्ञान, विज्ञान, आचार, व्यवहार, कानून, दर्शन, वस्तुकला, यंत्रकाल तथा प्रविधियों में होते है । बस सामाजिक परिवर्तन अपेक्षाकृत अधिक गतिशील कहे जा सकते है, क्योंकि धर्म, विज्ञान, परम्परा, कला और दर्शन में परिवर्तन तेजी से नहीं आते ।

मीडिया का अर्थ तथा उसका सांस्कृतिक मूल्यों पर प्रभाव

जनसंचार को संस्कृति का अंग कहा जा सकता है, जो संस्कृति निर्माण एवं विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि जनसंचार के सबसे पुराने एवं प्रभावशाली रूप की बात की जाए तो वह भाषा है। भाषा को सांस्कृतिक आदान-प्रदान का एक प्रशस्त माध्यम कहा जा सकता है। भाषा के विकास के माध्यम से ही किसी समाज के सांस्कृतिक विकास को मापा जा सकता है।

भाषा को ही संचार का पहला वास्तविक माध्यम माना जा सकता है। अंग्रेजी भाषा के मीडिया का हिन्दी रूपांतरण है संचार माध्यम। मीडिया से तात्पर्य है - दो बिन्दुओं को जोड़ने वाला। संचार माध्यम के द्वारा सम्प्रेषक एवं श्रोता सम्प्रेषण हेतु आपस में जुड़ते हैं और इसके द्वारा किसी भी सूचना को लोगों तक पहुंचाया जा सकता है। अर्थात मीडिया शब्द से तात्पर्य संचार के उन माध्यमों से है, जो किसी संदेश या उद्देश्य को एक ही समय में विभिन्न स्थानों पर विशाल

जन समुदाय तक पहुंचा सकते हैं। इनके द्वारा ऐसे विचारों, सूचनाओं, ज्ञान, जाग्रति, मनोवृत्ति, अधिकारों, नियमों की जानकारी प्राप्त होती है, जो मनुष्य के विकास एवं आवश्यक परिवर्तनों के लिए महत्वपूर्ण है।

ग्रामीण क्षेत्रों में संचार के माध्यमों का महत्व दिन-प्रति दिन बढ़ता चला जा रहा है। मीडिया संचार का एक महत्वपूर्ण साधन है, जो व्यक्ति को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में प्रभावित करता हैं। पुराने समय के मीडिया तथा वर्तमान समय के मीडिया में काफी अन्तर देखने को मिलता है। समाज का एक बहुत बड़ा भाग मीडिया से जुड़ा हुआ है। मीडिया समाज के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक क्षेत्रों को प्रभावित कर रहा है।

प्रिन्ट मीडिया का प्रभाव

ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता बढ़ने के साथ प्रिंट मीडिया का विस्तार गावों तक हुआ है। प्रिन्ट मीडिया या संचार के मुद्रित माध्यम के अन्तर्गत समाचार पत्र, पत्रिकाएं और पुस्तकें मुख्य रूप से आते हैं। संचार के लिए समाचार पत्रों का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना गया है। यह संचार का एक मुद्रित स्वरूप है जिसके लिए भाषा के लिखित रूप का प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग संचार में साक्ष्य के रूप में भी किया जाता है, जो इसका संचार के अन्य माध्यमों से विशिष्ट गुण है। भारत की आजादी में इन समाचार पत्रों की विशेष भूमिका रही है। व्यक्ति इनके माध्यम से अपने आचार-व्यवहार, रहन-सहन के तरीके, वेशभूषा आदि में परिवर्तन लाया है। यह संचार का सबसे सुलभ स्वरूप है। देश विदेश की जानकारी प्राप्त करनी हो, वहां यह समाचार पत्र सशक्त भूमिका अदा करते हैं। विशेषकर सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना एवं जानकारी प्राप्त करने का ये महत्वपूर्ण जरिया हैं, परन्तु आज के समय में व्यक्सायिकरण के चलते इन समाचारों में भी अश्लीलता का समावेश होता जा रहा है। कई बार लाभ अर्जित करने के लिए इन समाचार पत्रों के माध्यम से विज्ञापन के द्वारा समाज में अश्लीलता परोसी जाती है, जो भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का हनन करती है।

इलेक्ट्रानिक मीडिया का प्रभाव

आज मीडिया विशेषकर इलेक्ट्रानिक मीडिया के प्रभाव से ग्रामीण क्षेत्र विकास हेतु सजग हो रहे हैं। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त अनेक प्रकार के अंधविश्वास, जड़ता एवं पुरानी परम्पराओं के नाम पर किया जाने वाला शोषण पर असर हुआ है। मीडिया के परिणामस्वरूप आज गांवों में भी विकास की झलक नजर आने लगी है और ग्रामीणों से लेकर वनवासियों में भी जन्चेतना का प्रसार देखा जा सकता है। परन्तु वहीं रेडियों और टेलीविजन के बढ़ते प्रयोग तथा निरन्तर प्रचार से एक बहुत बड़ा खतरा हमारी संस्कृति को उत्पन्न हो रहा है। युवाओं में पश्चिमी देशों की अभद्र बातों की तरफ बढ़ती हुई चाह तथा खुलेपन ने हमारे इन संचार माध्यमों को खुली चुनौती दी है। रेडियों की पकड़ गाँव-गाँव तथा दूर-दराज के उन क्षेत्रों तक भी हो गई है, जहां बिजली की सुविधा नहीं है। वहां के लोगों में रेडियों ने प्रभावकारी परिवर्तन ला दिए है।, यदि टेलीविजन के समाज पर पड़ने वाले प्रभाव की चर्चा की जाए, तो इसका प्रभाव रेडियो के प्रभाव से अधिक कहा जा सकता है । क्योंकि इसके द्वारा व्यक्ति सुनने के साथ-साथ देख भी सकता है। टेलीविजन में धारावाहिक कार्यक्रमों के प्रदर्शन, फिल्मों के प्रदर्शन एवं अन्य कार्यक्रमों के प्रदर्शन के माध्यम से समाज में सांस्कृतिक

परिवर्तन आ रहे है। इंटरनेट ने तो समूचे विश्व को ग्लोबल विलेज का रूप दे दिया है। इंटरनेट के माध्यम से दूरी की महत्वता में बहुत अधिक कमी आई है। अब दूर के एक देश की संस्कृति के द्वारा बिना अधिक प्रयास किए हुए आसानी से दूसरे देश की संस्कृति प्रभावित होने लगी है। प्रभाव की यह प्रक्रिया अब अपेक्षाकृत अधिक त्वरित और सरल हो गई है। मीडिया का प्रभाव न केवल शहरी क्षेत्रों में, अपितु ग्रामीण परिवेश में भी देखा जा सकता है। शहरी इलाकों से दूर ग्रामीण परिवेश में जहां मनोरंजन हेतु सिनेमाघर और फिल्में ही मौजूद थी, अब वहां के युवा वर्ग के पास इंटरनेट से युक्त मोबाइल फोन देखे जा सकते है। यह भी सांस्कृतिक परिवर्तन का एक रूप है । ग्रामीण लोगों को टेलीविजन के माध्यम से उनके तीज त्यौहारों को दिखाकर उन्हें प्रेरित और प्रभावित किया जाता है। ग्रामीण लोग टेलीविजन के माध्यम से दिखाए गए तरीकों के अनुसार अपने पर्व एवं उत्सव मनाने लगे है जिसका वास्तविक उदाहरण करवा चौथ का त्यौहार है। मीडिया के द्वारा शिक्षा के प्रसार से इन ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की वेश-भूषा, खान-पान, रहन-सहन के साथ उनके बोलचाल के तरीकों में भी परिवर्तन देखे जा सकते है। अब इन क्षेत्रों में शादी या अन्य पारिवारिक उत्सव में लोक वाद्यों के साथ गाए गए लोकगीतों के स्थान पर आधुनिक साउण्ड सिस्टम का प्रयोग होता देखा जा सकता है।

फिल्मों का प्रभाव

संचार के तमाम माध्यमों में से फिल्म एक ऐसा माध्यम है जिसने दुनिया में सर्वाधिक लोगों पर अपना प्रभाव डाला है । इस माध्यम से जुड़े लोगों में अधिकतर युवा वर्ग है। इसी कारण फिल्मों का समाज पर प्रभाव भी गंभीर माना जाता है। सरकार के द्वारा भी संचार के इस माध्यम को सशक्त माध्यम स्वीकार किया गया है। अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृतियों के आदान प्रदान का यह एक महत्वपूर्ण साधन है। फिल्मों में प्रायः जीवन से जुडे. मुद्दो को आधार बनाया जाता है सामाजिक, आर्थिक, उत्पीड़न आदि पर आधारित फिल्मों का निर्माण किया जाता है। अंधविश्वास, कुरीतियों, आडम्बरों के विरूद्ध एवं आवश्यक पक्ष में भी फिल्मों का निर्माण होता है, जिन्हें देखकर व्यक्ति स्वयं का नजरिया निर्धारित करता है। आज के युवाओं पर फिल्मों का इतना अधिक प्रभाव है कि उनके पहनावे फैशन का निर्धारण ये फिल्में ही करती है। लोगों के खान-पान, रहन-सहन, विचार-व्यवहारों आदि पर भी इनका प्रभाव देखा जा सकता है।

सोशल मीडिया का प्रभाव

आधुनिक युग में सोशल मीडिया को संचार माध्यमों का सबसे त्वरित और प्रभावी माध्यम कहना गलत नहीं होगा। आज व्यक्ति को मोबाइल फोन पर इंटरनेट के माध्यम से विश्व की तमाम जानकारी प्राप्त हो जाती है साथ ही इसी इंटरनेट के माध्यम से वह सोशल मीडिया के साथ जुड़ सकता है। जहां वह अपने विचारों की अभिव्यक्ति के साथ दूसरों को देख सुन और उनके विचारों को भी प्राप्त कर सकता है, अन्य लोगों के साथ जुड़ सकता है और मनोरंजन भी कर सकता है। सोशल मीडिया का क्षेत्र बहुत व्यापक होता जा रहा है, जो व्यक्ति को हर क्षेत्र में प्रभावित कर रहा है, परन्तु त्वरित एवं प्रभावी होने से इसके दुष्परिणाम भी देखने को मिल रहे है, कई बार यह समाज में हिंसा और अपराधों को भी जन्म देता है, जो इसके नकारात्मक पक्ष को दर्शाता है। समाज में सोशल मीडिया का प्रभाव इतना अधिक हो गया है कि अब इस बात

से फर्क नही पड़ता कि आप जाग रहे है या सो रहे है। अब इस बात से फर्क पड़ता है कि आप ऑनलाइन हैं या ऑफ़लाइन।

निष्कर्ष

आधुनिक युग को संचार क्रान्ति के युग के नाम से परिभाषित किया जाने लगा है। इस क्रान्ति ने मानव की बाहरी दुनिया के साथ साथ उसकी आंतरिक दुनिया को भी प्रभावित किया है। यह मानव को आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं पारिवारिक स्तर पर प्रभावित करने के साथ साथ आंतरिक रूप से भी प्रभावित कर उसमें नए क्रान्तिकारी बदलावों को ला रही है। आज के समय में मीडिया व्यक्ति के जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है, जिसका प्रभाव उसके जीवन में सुबह उठने से लेकर रात को उसके सोने तक रहता है। मीडिया व्यक्ति के विचारों, अभिवृत्तियों, शिक्षा, स्वास्थ्य, उसकी अन्तःक्रियाओं के साथ-साथ उसकी मान्यताओं, आदर्शों, परम्पराओं, मूल्यों आदि को भी प्रभावित करता है। मीडिया के ये प्रभाव सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों है, यदि मानव कल्याण और समाज को ध्यान में रखते हुए इसका प्रयोग किया जाता है, तो यह सभी के लिए अत्यंत ही लाभप्रद होगा। आज व्यक्ति के लिए यह परमावश्यक है कि वह मीडिया का सकारात्मक प्रयोग करते हुए स्वयं व समाज का विकास कर प्रगति करे और आवश्यक एवं सकारात्मक परिवर्तनों को स्वीकार करते हुए मीडिया के नकारात्मक पक्ष से सभी को सुरक्षित रखे। मीडिया पर आँखें बंद करके विश्वास न करे और मीडिया द्वारा प्रदर्शित की गई ऐसी सूचनाओं का बहिष्कार करे, जिनसे सामाजिक मूल्यों एवं सामाजिक सौहाद्रता को क्षति पहुँचती हो। संस्कृति हमारी विरासत और पहचान है, जिसे जीवित रखना हमारा कर्तव्य है। आज के समय में संस्कृति के विकास और प्रगति हेतु व्यक्ति को अपना योगदान देना आवश्यक जान पड़ता है साथ ही मीडिया भी समाज की आधार शिला है और एक स्वस्थ्य समाज की संकल्पना बिना स्वस्थ्य मीडिया के सम्भव नहीं है । अतः मीडिया को भी संस्कृति की रक्षा हेतु जिम्मेदारी लेनी चाहिए। आजकल मीडिया में केवल राजनीतिक, रक्षा एवं विदेश मामलों पर ध्यान दिया जाता है और ग्रामीण विकास एवं कृषि से सम्बन्धित मुद्दों को अपेक्षाकृत रूप से ध्यान नहीं दिया जाता है। यदि इन मुद्दों पर भी ध्यान दिया जाए, तो भारत का ही दिशा में निर्माण हो सकता है और देश विकासशील से विकसित देश बन सकता है। अतःमीडिया को चाहिए कि वह अपनी खबरों में समाज के ग्रामीण परिवेश से सम्बन्धित खबरों को भी महत्वपूर्ण स्थान देते हुए उनका प्रकाशन एवं प्रसारण करे।

संदर्भ ग्रन्थ

पारख, जवरीमल्ल; जनसंचार माध्यम और सांस्कृतिक विमर्श, ग्रन्थ शिल्पी पब्लिकेशन दिल्ली, 2010

प्रसाद, डॉ. राजेन्द्र, जनसम्पर्क स्वरूप और सिद्धान्त, संजय प्रकाशन, दिल्ली, 2007

शर्मा, राधेश्याम; ग्रामीण चेतना और पत्रकारिता,

गुप्ता, व्ही. एस. और राजेश्वर दयाल; रूरल प्रेस प्राब्लम्स एण्ड प्रास्पेक्टस (सम्पादित), कांसेप्ट पब्लिशिंग नई दिल्ली, 1995)

निगम, डॉ. बी. एस., सूचना सम्प्रेषण एवं समाज, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1994

जोशी, पूरनचन्द संस्कृति विकास और संचार क्रान्ति ग्रन्थ शिल्पी पब्लिकेशन, दिल्ली, 2001

गुप्ता, वी. एस.; कांस्ट्रेंट इन रिपोर्टिंग रूरल डिवलपमेण्ट (दुआ एम आर. एवं वी. एस. गुप्ता (सम्पादित); मीडिया एण्ड डिवलपमेण्ट, हर आनंद पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1994